तोरिया एवं सरसों
(RAPE SEED AND MUSTARD)

उत्तर प्रदेश में तिलहनी फसलों में सरसों का प्रथम स्थान है। इस वर्ग में सम्मिलित अनेक फसलों में तोरिया, सरसों और राई प्रमुख हैं। तोरिया और सरसों में तेल की औसत मात्रा 37–49 प्रतिशत एवं प्रोटीन 20–40 प्रतिशत होती है।

प्रजातियाँ

(क) तोरियाः टा0 9, पी.टी 303, पी.टी. 507 व भवानी,

(ख) राई–सरसों : वरूणा, रोहिणी, क्रान्ति, कृष्णा, वरदान, नरेन्द्र अगेती राई–4, (सितम्बर में बोवाई) नरेन्द्र स्वर्ण राई–8, नरेन्द्र राई 8501, किरन, पूसा बोल्ड, बसन्ती, पूसा करिश्मा, उर्वशी, पूसा अग्रणी, क्रान्ति स्वर्ण ज्योति (सिंचित/ देर से बोआई) आर.एच. 30 व सी.एस. 52

बीज एवं बोआई

Qly	ckvkb dk le;	cht nj ¼ifr gDV;j½	cht 'kks/ku	ckvkb dh njh
rkfj;k	15&30 flrEcj	4 fdyksxke	2-5 xke Fkk;je ;k edktc @ feVkyfDly 1-5 xke ifr fdyksxke cht	30x10&15 lseh] xgjkb ¼ 3&4 lseh
jkb&ljlk	1&20 vDVcj	5 fdyksxke		45x15 lseh] xgjkb ¼ 4&5 lseh

गेहूँ के साथ सरसों की मिश्रित खेती करने पर 150 सेंमी की दूरी (9 लाइन गेहूँ के बाद एक लाइन सरसों) पर्याप्त होती है।

उर्वरक प्रबन्धन

तोरिया	बोआई के समय (प्रति हे0)	100 किलोग्राम यूरिया	250 किलोग्राम एस.एस.पी	34 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश
	टाप ड्रेसिंग (प्रति हे0)	बोआई के 25-30 दिन बाद खड़ी फसल में 100 किलोग्राम यूरिया की टाप ड्रेसिंग।		
राई-सरसों	बोआई के समय (प्रति हे0)	130 किलोग्राम यूरिया	250 किलोग्राम एस.एस.पी.	67 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश
	टाप ड्रेसिंग (प्रति हे0)	बोआई के 30-35 दिन बाद खड़ी फसल में 130 किलोग्राम यूरिया की टाप ड्रेसिंग।		

बोआई के समय उर्वरकों को बीज से 2–3 सेंमी नीचे डालना चाहिये। राई–सरसों में असिंचित क्षेत्रों में उक्त उर्वरकों की आधी मात्रा ही बोआई के समय प्रयोग करना चाहिये।

जल प्रबन्धन

तोरिया और सरसों जल की कमी के प्रति फूल निकलने से पूर्व व दाना भरने की अवस्थाओं पर विशेष संवेदनशील हैं। तोरिया में 5–6 सेंमी गहरी सिंचाई बोआई के 25–30 दिन बाद तथा राई–सरसों में बोआई के बाद 30–35 दिन व 55–65 दिन पर अवश्य करें।

निराई–गुड़ाई एवं विरलन

तोरिया व सरसों में खरपतवार होने से उपज में 20–30 प्रतिशत कमी होती है। तोरिया में बोआई के 15–20 दिन के अन्दर खरपतवार व साथ ही घने पौधों को निकालकर दूरी 10–15 सेंमी तथा राई–सरसों में सिंचाई के पहले खरपतवार व घने पौधों को निकालकर आपस की दूरी 15 सेंमी कर देनी चाहिये। तोरिया एवं सरसों में खरपतवारों के रासायनिक नियन्त्रण हेतु बोआई के तुरन्त बाद पेन्डीमेथीलीन 3.3 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 800–1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

एकीकृत रोग–कीट प्रबन्धन

झुलसा रोग : झुलसा रोग में पत्तियों एवं फलियों पर गहरे कत्थई रंग के धब्बे बन जाते हैं। फलियों में दाने छोटे बनते हैं। वर्षा/बादल छाये रहने पर इस रोग का प्रकोप अधिक होता हैं।

तुलासिता/मृदुरोमिल रोग : इस रोग में पत्तियों की ऊपरी सतह

पर पीलापन लिये हुये धब्बे तथा निचली सतह पर सफेद रोयेंदार फफूँदी दिखाई पड़ती है।

सफेद गेरुई रोग : सफेद गेरुई रोग में पत्तियों व पुष्प विन्यासों पर सफेद फफोले बनते हैं। पुष्प विन्यास कोशिकाओं की अनियमित वृद्धि से बहुत विकृत हो जाती है।

प्रबन्धन : उपरोक्त सभी रोगों से बचने के लिये रोग प्रतिरोधी प्रजातियों का शोधित बीज बोयें। सन्तुलित उर्वरकों का प्रयोग करें। जिरम 80 प्रतिशत 2.0 किलोग्राम या मैंकोजेब 75 प्रतिशत 2.0 किलोग्राम या जिनेब 75 प्रतिशत 2.5 किलोग्राम 800–1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

आरा मक्खी : आरा मक्खी का आक्रमण तोरिया पर अधिक होता है। ये पत्तियों को खाकर छलनी कर देती हैं और धूप आने पर जमीन मे छिप जाती हैं।

प्रबन्धन : इनकी रोकथाम हेतु मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 20–25 किलोग्राम या इण्डोसल्फान धूल 4 प्रतिशत चूर्ण 20 किलोग्राम का बुरकाव करें अथवा इण्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

मॉँहू कीट : माँहू कीट पत्तियों, फूलों, डंठलों व फलियों पर चिपके रहते हैं और उनका रस चूसते हैं, जिससे फलियाँ/दाने कम बनते हैं।

प्रबन्धन : इसकी रोकथाम हेतु बोआई समय से थोड़ा पूर्व करें। मॉँहू ग्रसित फुनगी तोड़कर फेंक दें। क्राइसोपरला कीट 50,000 प्रति हेक्टेयर की दर पूरे खेत में छोड़ें। मिथाइल ओडिमेटान 25 ई.सी. 1.00 लीटर या इण्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.25 लीटर या मैलाथियान 50 ई.सी. 1.50 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

xfrfof/k pkV

tyok; % B.Mk rkieku]
lkQ vkj [kyk vklekus o de vknzrk

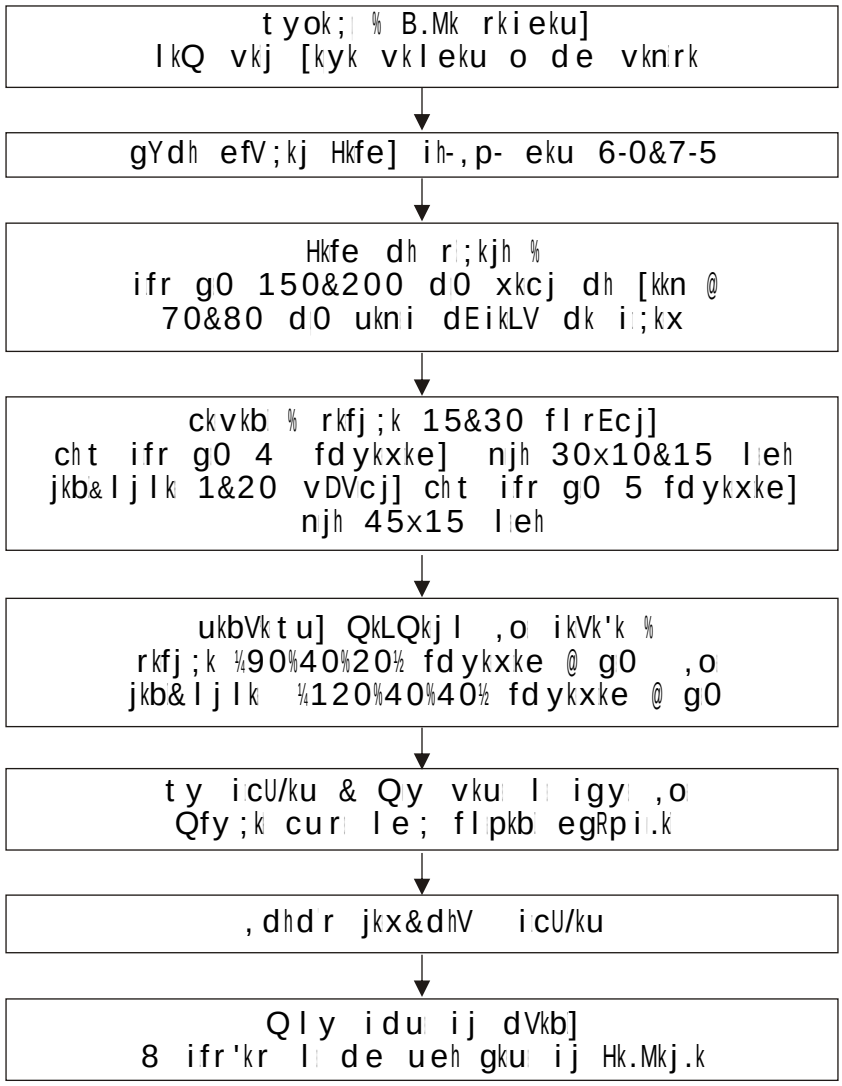

↓

gYdh efV;kj Hkfe] ih-,p- eku 6-0&7-5

↓

Hkfe dh r;kjh %
ifr g0 150&200 d0 xkcj dh [kkn @
70&80 d0 ukni dEikLV dk i;kx

↓

ckvkbZ % rkfj;k 15&30 flrEcj]
cht ifr g0 4 fdykxke] njh 30x10&15 lseh
jkb&ljlk 1&20 vDVcj] cht ifr g0 5 fdykxke]
njh 45x15 lseh

↓

ukbVkstu] QkLQkjl ,o ikVk'k %
rkfj;k ¼90%40%20½ fdykxke @ g0 ,o
jkb&ljlk ¼120%40%40½ fdykxke @ g0

↓

ty icU/ku & Qy vkus ls igys ,o
Qfy;k curs le; flpkbZ egRpi.k

↓

,dhdr jkx&dhV icU/ku

↓

Qly idus ij dVkb]
8 ifr'kr ls de ueh gkus ij Hk.Mkj.k

प्रति हेक्टेयर सरसों की खेती का आय–व्यय (वर्ष 2009)

mRikn	mit ¼d0@g0½	fod; nj ¼:0@d0½	lEi.k vk; ¼:0@g0½	mRiknu ykxr ¼:0@g0½	'k) vk; ¼:0@g0½	ykHk ykxr vuikr
ljlk	20	1830	36600	15000	21600	2-4%1

प्रति हेक्टेयर तोरिया की औसत उपज 10–15 कुन्टल तथा राई–सरसों की 20–25 कुन्टल प्राप्त होती है।